'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०३ } वाराणसी, गुरुवार, १० सितम्बर, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कुकरनाग (कश्मीर) २१-८-'५९

रूहानियत मजहब के घेरे से बहुत दूर है

(प्रवचन के आरम्भ में पू० विनोबाजी ने लोगों से कहा : "मैं बोलूँ और आप सुनें, ऐसा तो रोज़ ही होता है। कल मैं यहाँ बोला था। इसलिए आज चाहूँगा कि आप में से कोई भाई, बहन या बच्चे मुझसे सवाल पूछें और तब मैं कुछ बोलूँ।" यह सुनकर उपस्थित लोगों में से एक भाई उठा और उसने पूछा कि 'मजहब और रूहानियत में क्या फर्क है?' विनोबाजी ने उसके जवाब में बोलते हुए प्रवचन प्रारंभ किया—सं.)

रूहानियत और मजहब एक नहीं

आपने बहुत अच्छा सवाल पूछा है। कल हमने कहा था कि सियासत तोड़ती है, रूहानियत जोड़ती है। यह भी हमने कहा था कि रूहानियत मजहब से अलग चीज है। मजहब हर जमाने में, हर कौम के लिए और हर समय के लिए एक नहीं होता। रूहानियत एक होती है। जैसे प्यार करना, सच बोलना, रहम रखना—यह रूहानियत है, वैसे ही अल्लाह की इबादत करना—यह भी रूहानियत है। लेकिन अल्लाह की इबादत के लिए घुटने टेकना, मगरीब की तरफ मुँह करके इबादत करना, या मशरिक की तरफ मुँह करके इबादत करना, आदि सब मजहब है। अल्लाह के लिए दिल में भक्ति रखो, अल्लाह को हमेशा याद करो, अल्लाह की फिक्र रखो—यह रूहानियत है। ये सारे जो मजहब है, वे रूहानियत की तरफ ले जाने के लिए हैं।

मजहब और झगड़े

आज क्या होता है? सीढ़ियाँ बनायीं। सीढ़ी पर चढ़ा, लेकिन बीच में ही अटक गया, ऊपर पहुँचने के बजाय बीच में ही रुक गया। जो चीज मजहब के लिए बनायी गयी है, वह इन्सान को एक हद तक मदद पहुँचाती है और बाद में रुकावटें डालती है। मूरख लोग यह नहीं समझते और मजहब के नाम से झगड़ते हैं! वे नहीं समझते कि मजहब बदलता है। रूहानियत बदलती नहीं है। मरने के बाद दफनाना चाहिए या दहन करना चाहिए? हिंदू होगा तो दहन करेगा, मुसलमान होगा तो दफनायेगा—यह सब हो गया मजहब। लेकिन हिंदू हो, मुसलमान हो या दूसरा कोई भी हो, अपने मरे हुए बाप की लाश अपने घर में नहीं रखेगा। बल्कि बाइज्जत उसे भगवान के हवाले कर देगा। यह ठीक है कि किसीके भी मरने पर भगवान की इबादत करनी चाहिए, उसकी दुआ माँगनी चाहिए, ताकि वह मरे हुए को ताकत दे, शान्ति दे। परन्तु उस मरनेवाले को परमेश्वर के हवाले मिट्टी के जरिये करना कि आग के जरिये करना—यह दूसरी बात है! दिल्ली जाना है। जाने के लिए ५-१० रास्ते हैं। जिस किसी भी रास्ते से जायँ तो मुकाम पर तो पहुँच ही जायँगे, जलाना हो या दफनाना, जिस किसी भी तरीके से हो—लाश परमेश्वर के पास पहुँचानी है। परमेश्वर के पास पहुँचाना, यह रूहानियत है और दफनाना या दहन करना, यह मजहब है। मजहब के तरीकों में कभी-कभी फर्क होता है। यह फर्क होता है, इसलिए कभी-कभी मजहबवाले नाहक झगड़ते हैं। जैसे कभी-कभी जबान के, जाति के, सूबे के, मुल्क के झगड़े होते हैं, वैसे ही मजहब के भी झगड़े होते हैं। मैं नहीं समझता कि ऐसे झगड़े क्यों होने चाहिए?

मजहब से चिपकना क्यों?

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।" ऐसा शायर ने कहा है, लेकिन मजहब के काम से ही झगड़े होते हैं। मजहब से ही जजबा पैदा होता है। कुरानशरीफ में यह आता है कि "हरएक जमात, उसके पास जो चीज पड़ी है, उसीपर फक्र करती है।" मुझे लोग पूछते हैं: "क्या आप कुरानशरीफ पढ़ते हैं?" मैं कहता हूँ "जी हाँ।" फिर पूछते हैं "क्या आप हरएक आयात पर चलते हैं?" "जी नहीं।" क्योंकि जिस आयात से मुझे जितना लेना होता है, उतना लेता हूँ। मगर मैं किसी आयात का, गीता का, कुरानशरीफ का, बाइबल का या किसी भी किताब का बोझ नहीं उठाता हूँ। बाजार में जो चीज देखता हूँ और उसमें से जो जँचती है, उसे ले लेता हूँ। किसी चीज को पूरा-पूरा कबूल करें या पूरा छोड़ें, यह मैं कबूल नहीं करता हूँ।

इन्सान के लिए शास्त्र या शास्त्रों के लिए इन्सान?

मजहबवालों में क्या होता है? वे बुतपरस्ती नहीं चाहते हैं। लेकिन किताब-परस्त जरूर हो जाते हैं। आश्चर्य तो यह है कि वे किताब के बारे में भी कुछ खास जानते नहीं हैं! अभी मैंने

www.vinoba.in

सुना और देखा। एक जगह से मुझसे पण्डित लोग मिलने आये थे। वे वेद नहीं पढ़ सके। अब वेद न समझना यह ठीक है। क्योंकि बहुत कठिन चीज है वह! परन्तु पढ़ते समय तलफ्फुज भी ठीक नहीं करते थे। ऐसी हालत है इनकी। इसपर भी कितनी जिद रखते हैं। वे किताब को पकड़े रहते हैं। सिर पर उठाये रहते हैं।

समझना चाहिए कि किताब और धर्म-शास्त्र इन्सान के लिए होते हैं या इन्सान उनके लिए? किताब में से ऐसी ही चीज लेनी चाहिए, जो अपने लिए मुफीद हो, उपयोगी हो। मान लीजिये, दवा की किताब है। उसमें हर तरह की बीमारी की, मरजों की दवा लिखी है। पर क्या वह सभी दवा मुझे लेनी ही चाहिए? नहीं, किताब में पचासों चीजें होती हैं। जिनमें से कुछ ऐसी होती हैं, जो सबके लिए होती हैं और जो सबके लिए होती हैं, उन्हीं चीजों का नाम है रूहानियत। एक-दूसरे को हक पर चलने के लिए हिदायत दो, मदद करो, एक-दूसरे को रहम रखने के लिए सिखाओ। हक, सब्र, मुहब्बत—ये बातें सबको लागू होती हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान आदि सभी धर्म-वालों पर भी लागू होती हैं। इसीका नाम है रूहानियत!

कुछ लोग रात में फाँका करते हैं, कुछ लोग दिन में। कुछ लोग ऐसे हैं, जो रात में कभी नहीं खायेंगे। जैसे जैन! जैन लोग शाम को सूरज डूबने से पहले खा लेंगे। वे कहते हैं कि रात में चूल्हा जलाने से जंतु, कीड़े आदि जीव मरते हैं। मुसलमान रोजा रखते हैं। वे रात में खायेंगे, दिन में नहीं। इसका नाम है मजहब। लेकिन अपने पर जप्त रखने के लिए फाँका करना—यह है रूहानियत! जियारत के लिए मक्का जाना, अजमेर जाना या काशी, अमरनाथ जाना, यह है मजहब, लेकिन कभी-कभी घर छोड़कर खिदमत के लिए बाहर निकलना—यह है रूहानियत! मैं काशी गया, वहाँ भी मुझे खुशी हुई। अजमेर गया था, वहाँ भी खुशी हुई। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है, मैं वहाँ-वहाँ जाता हूँ और वहाँ मुझे खुशी होती है, बहुत ताकत मिलती है। कुछ लोग ऐसे मूरख होते हैं, जो अमरनाथ की यात्रा में जानेवालों को देखकर कहते हैं कि ये लोग कितने मूरख हैं। और कुछ अजमेर जानेवालों को देखकर कहते हैं कि ये कितने मूरख हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है, वहाँ-वहाँ जाना चाहिए। बुजुर्गों ने जो राह बतायी है, उसपर चलो, बुजुर्गों की सेवा करो, उनकी बातें सुनो—यह सब रूहानियत है। मजहब बाहरी चीजों के लिए आदेश देता है, रूहानियत अन्दर की ताकत बढ़ाती है।

भगवान और भक्त के बीच मजहब की एजेन्सियाँ!

मजहब का मतलब है—इन्सान को रूहानियत की तरफ ले जाना। दोनों एक ही चीज की तरफ जाते हैं। लेकिन कुछ लोग रास्ता नहीं जानते हैं, इसलिए मजहब उनको आहिस्ता-आहिस्ता ले जाता है। रूहानियत एकदम रोशनी डालती है। सही चीज क्या है और क्या नहीं, रूहानियत एकदम बताती है। मजहब क्या करता है? अंधा समझकर इन्सान को हाथ पकड़कर धीरे-धीरे ले जाता है। 'इधर चलो' या 'उधर चलो' ऐसे रास्ता बताता है। यह मुल्ला है, यह ब्राह्मण है, यह गुरु है, इनके पीछे चलो—यह सब मजहब सिखाता है। रूहानियत एकदम रोशनी देती है। वह कहती है, देखो, तुम्हारे और अल्लाह के बीच में और कोई भी नहीं है। मजहब कहता है, अल्लाह के पास पहुँचना है तो बीच में कोई एजेन्ट चाहिए। फिर चाहे वह पुरानी किताब हो या पुरानी मूर्ति! मन्दिर में जाना हो या मस्जिद में! गुरु की बात सुनो या किताब की! मजहब में किताब, मन्दिर, मस्जिद यह सब आता है तो अल्लाह और इन्सान के बीच परदा खड़ा हो जाता है। रूहानियत कहती है कि तेरा अल्लाह के साथ सीधा ताल्लुक है, बीच में कोई एजेन्ट नहीं है। मजहब और रूहानियत में यही भेद है।

आनेवाला युग

"नवयुग का तकाजा है कि हम अपने सामाजिक सूत्रों को परिवर्तित कर डालें। भूतकाल में यह सम्भावना थी कि लोग परम्परागत पारिवारिक दल के आधार पर समाज-रचना करें, क्योंकि उस समय विज्ञान ने इतनी उन्नति नहीं की थी। परन्तु दुनिया से अलग-अलग छोटी सी इकाई बनाये रखना अब संभव नहीं है। इस समय कोई भी व्यक्ति ग्राम-समाज से पृथक् रहकर अपना गुजारा नहीं कर सकता। आनेवाला युग ग्राम-परिवार का युग होगा।"

मैं अल्लाह को पकड़ता हूँ

मैं गीता, जपुजी, कुरानशरीफ, बाइबल पढ़ता हूँ। लोग कहते हैं, तुम किसी एक किताब को पकड़ो। मैं कहता हूँ कि मैं किसी एक किताब को नहीं पकड़ता। अल्लाह को ही पकड़ता हूँ। वह चीज मुफीद है, वह मुझे हर चीज में मिल ही जाती है।

उम्मतुम् वाहिद्

दुनिया के नबीयों, ऋषियों और वसीयों को अल्लाह कहता है कि तुम्हारी सबकी कौम एक ही है। लेकिन लोगों ने फिरके बनाये हैं। हरकोई समझता है कि हमारी चीज अच्छी है। लेकिन अल्लाह ने नबीयों को कहा है कि तुम्हारी कौम एक ही है।

अल्लाह को न भूलना, अल्लाह पर प्यार करना, झूठ न बोलना, सच बोलना—यह रूहानियत है। रूहानियत हमारे लिए एक ही है। मजहब गलत हो सकते हैं, अलग-अलग भी हो सकते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं। लेकिन रूहानियत सबके लिए एक ही होती है और वह अच्छी ही होती है।

अल्लाह के नाम पर भेद क्यों?

अब आप हमारी रूहानियत देखिये। अल्लाह को याद करना है, खामोशी में। मन में अल्लाह का नाम लेना है। वही नाम अपने-आपको प्रिय होगा। पर इसके लिए घुटने टेकना या खड़े रहना, श्लोक बोलना या आयात बोलना—आदि ऐसी कोई बात नहीं है। सिर्फ पाँच मिनट खामोश रहना और अल्लाह को याद करना है। इसलिए इसमें सभी मजहबवाले तथा सभी भाई, बहन, बच्चे, बूढ़े आदि शामिल हो सकते हैं। आज क्या होता है? हम खाने के लिए होटलों में इकट्ठा होते हैं और कामों में भी इकट्ठा होते हैं। लेकिन अल्लाह की इबादत के नाम पर अलग हो जाते हैं! एक अल्लाह ही ऐसा कम्बख्त निकला, जिसके नाम से हम अलग-अलग होते हैं। इसके मानी यह है कि हम अल्लाह को पहचानते ही नहीं। अल्लाह के नाम पर तो हमें एक होना चाहिए। उसके लिए हमें तरकीब ढूँढनी चाहिए। उसे हमने ढूँढ़ निकाला है और वह है खामोशी (मौन प्रार्थना)।

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

बनिहाल (कश्मीर) २४-८-'५९

भूदान-तहरीक की जरूरत पूरी मानव-जाति के लिए है

[सभा की शुरुआत में 'जम्मू-कश्मीर' असेम्बली के स्पीकर साहब—जो कि इस विभाग के हैं—ने स्वागत-भाषण दिया। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि 'विनोबाजी का विचार सिर्फ हिंदुस्तान के लिए ही नहीं है। यह तो सारी दुनिया के लिए है।' स्वागत भाषण का उत्तर देते हुए विनोबाजी ने जो प्रवचन दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है—सं०]

हमारे भाई साहब ने मेरा काम कुछ आसान बना दिया है। मैं जो बातें आपके सामने रखना चाहता हूँ, वह उन्होंने मुख्तसर, थोड़े में अच्छी तरह खुलासे के साथ बता दी हैं।

कुछ खोया-खोया लग रहा है

मुझे बहुत खुशी है कि हमारी बात सुनने के लिए बड़े प्यार से सारे भाई-बहनें और बच्चे आये हैं। यही नजारा मैं आठ-साढ़े आठ साल से देख रहा हूँ। क्या बिहार में और क्या तमिलनाड में, सभी जगह हमारी बात सुनने के लिए लोग बहुत प्यार से आते हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि आज हिंदुस्तान में और दूसरे देशों में भी जो कुछ चल रहा है, उससे लोगों को इत्मीनान नहीं है, सुकून नहीं है। एक खालीपन-सा महसूस हो रहा है। कुछ खोया-खोया-सा लग रहा है। अपनी खोयी हुई चीज की तलाश हो रही है। क्या चीज खोयी है, इसका अंदाजा नहीं है। लेकिन एक चीज हम खो बैठे हैं, ऐसा एहसास दुनिया में सब देश के लोगों को हो रहा है। इसलिए एक तलाश में इन्सान का दिल और दिमाग काम कर रहा है। परमेश्वर की कृपा से किसी न किसी तरह से यह खोयी हुई चीज मिलेगी। कुछ लोगों को यह भी लग रहा है कि शायद इस तहरीक से खोयी हुई चीज मिलेगी।

मैंने जर्मन भाषा सीखी!

न सिर्फ हिन्दुस्तान के, बल्कि दुनिया के दूसरे देशों के लोग भी हमारी यात्रा में शामिल होते हैं। यूरोप, अमेरिका, एशिया आदि सब ओर से लोग आते हैं। कोई हमारे साथ चंद दिनों तक रहता है तो कोई चंद माह तक। एक जर्मनी की लड़की हमारे साथ यात्रा में रही और अब वह हिन्दुस्तान में ही रह गयी है। उसका इस तहरीक पर बहुत प्यार है। इस यात्रा के दरम्यान मैंने जर्मन जबान सीखी। अब इस उम्र में मैं जर्मन जबान सीखने की तमन्ना नहीं रखता था। लेकिन वह लड़की आयी और गाँव-गाँव तथा जंगल-जंगल में हमारे साथ घूमी। उसका इस तहरीक पर इतना प्यार देखकर मुझे लगा कि जर्मन जबान सीखना मेरा फर्ज है। इसलिए मैंने वह जबान सीख ली।

जापानी भी सीखी

जापान के एक साधु आये। वे तीन महीना हमारी यात्रा में रहे थे। उन्होंने यह देखकर कहा कि इस तहरीक की जापान को सख्त जरूरत है। अब वे वापस जापान गये हैं। उन्होंने वहाँ पर यहाँके नमूने का एक सर्वोदय-आश्रम खोला है, अब वहाँ वे मुश्तरका खेती कर रहे हैं। बाहर के देशों का हिन्दुस्तान पर जो प्यार है, वह यहाँकी सभ्यता के कारण है, ऐसा वे भाई कह रहे थे। मैंने उनसे जापानी जबान सीख ली, ताकि दिल से दिल जुड़ जायँ। दो दिलों को नजदीक लाने में जबान सहायक होती है।

आपको यह सुनकर खुशी ही होगी कि यहाँ भी मैंने कश्मीरी सीखने की कोशिश की। मुझे ठीक मदद तो नहीं मिली, लेकिन फिर भी मैंने कोशिश की। खैर! यह सब इसलिए बता रहा हूँ कि दुनिया के मुख्तलिफ देशों के लोग आये, इस यात्रा में शरीक हुए। उन्होंने अपने-अपने देशों में जाकर इसपर मजमून लिखे, किताबें लिखीं और आशीर्वाद दिया कि यह तहरीक फले, फूले। भारत की अपनी ताकत महसूस हो तो यह देश दुनिया को राह दिखा सकता है, इस तरह की बातें उन्होंने लिखी हैं।

आज जो मुख्तलिफ देशों में नेशनलिज्म है, अपने-अपने देशों का अभिमान, गुरूर है, उससे दुनिया बहुत तंग है। उससे हम नजात कैसे पायें, इसकी कुछ राह इस तहरीक में मिल जायगी ऐसी हालत दीख रही है। इसलिए दुनिया में इस काम के लिए हमदर्दी पैदा हुई है।

सियासत छोड़ें

आज दुनिया में जो सियासत चल रही है, उसमें छोटे-छोटे देश एक-दूसरे से डर रहे हैं और बड़े-बड़े देश भी। छोटे देश से मेरा मतलब मरदुमशुमारी से नहीं, बल्कि जिनकी ताकत कम है, ऐसे देशों से है। रूस और अमेरिका जैसे बड़े-बड़े देश भी एक-दूसरे से बचने के लिए खौफनाक हथियार पैदा कर रहे हैं। शेरों से बचने के लिए तीर, तलवार और बन्दूक इन्सान को काफी मालूम हुई। बंदूक के डर से शेर जंगलों में भाग गये हैं। अब वे इन्सानों से ही डरते हैं। लेकिन आज तो इन्सान से इन्सान डर रहा है। उसके लिए खौफनाक हथियार ढूँढ़े जा रहे हैं। १४ साल पहले हिरोशिमा पर एक जबर्दस्त बम गिरा तो फौरन लड़ाई खत्म हो गयी। सारे लोग घबड़ा गये। क्योंकि एक बम ने एक पूरे शहर को खत्म कर दिया था। लेकिन अब आप सुनकर ताज्जुब करेंगे कि आज ऐसे हथियार निकाले गये हैं, जो हिरोशिमा पर गिरे हुए बम से भी हजार गुना ज्यादा खौफनाक हैं। इन्सान से बचने के लिए इन्सान इतने खौफनाक हथियार बना रहा है! फिर भी मसले हल नहीं हो रहे हैं। वे और अधिक पेचीदे बन रहे हैं! इससे इन्सान का दिमाग काम नहीं कर रहा है। किसीके ध्यान में यह नहीं आ रहा है कि पुरानी सियासत विज्ञान के जमाने में गयी-बीती हो गयी है।

आज अमेरिका के कुल अखबार रूस के खिलाफ लिखते हैं और रूस के कुल अखबार अमेरिका को नीचा दिखाते हैं। पाकिस्तान के कुल अखबार 'हिंदुस्तान हमला कर रहा है' ऐसा लिखते हैं और हिंदुस्तान के कुल अखबार 'पाकिस्तान हमलावर है' लिखते हैं। लोग पढ़ते हैं और विश्वास करते हैं। पर अब इस तरह से इकतरफा जमातें बनेंगी तो हालत बहुत खतरनाक हो जायगी। यह विज्ञान फरमाता है कि तुम एक हो जाओ और नेक बनो, एक दूसरे पर एतबार करो, सामनेवाले पर जरा भरोसा रखो तो सामनेवाला भी तुमपर भरोसा रखेगा और हमारे मसले दुनिया के मसले हैं, ऐसा समझो। मगर विज्ञान की बात को हम सुन नहीं रहे हैं, विज्ञान आगे बढ़ रहा है और हम आपस-आपस में टकरा रहे हैं। ऐसा टकराना तब तक चलेगा, जब तक हम सियासत को पकड़े रहेंगे।

आजकल यह जो सियासत चल रही है, वह इन्सान को इन्सानियत के साथ खत्म करनेवाली है। इसलिए हम बड़ा दिल बनायें और एक-दूसरे प्यार करने की तरकीब ढूँढ़ें।

www.vinoba.in

कश्मीर की विशेषता

जब से मैं कश्मीर में आया हूँ, तभी से यह कह रहा हूँ कि ये मसले सियासत से हल होनेवाले नहीं हैं, रूहानियत से हल होनेवाले हैं। सियासत से दिमाग उलझेंगे। यहाँकी सब सियासी पार्टियों के साथ हमारी बातें हुई हैं। खुशी की बात है कि किसी भी जमात ने अपना दिल हमसे छिपाया नहीं। चाहे वह प्रजा-पार्टी हो, महाज रायशुमारी हो, पॉलिटिकल कान्फ्रेंस हो, डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस हो या नेशनल कान्फ्रेन्स हो। सभीने अपने खयाल हमारे सामने दिल खोलकर रखे। वे यह जानते हैं कि यह शख्स सबका भला चाहता है, इसलिए यह गैरजानिबदारी से नेक सलाह देगा। खिलाफ राय जाहिर करेगा भी तो भला ही चाहेगा। ऐसे यकीन से जमातों ने और अनफरदा शख्सों ने भी हमसे बातें कीं। इसलिए मैं कश्मीर से वाकिफ हो सका।

मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ और मुझे महसूस हुआ कि यहाँ-की कुदरत खूबसूरत है, यहाँके लोग खूबसूरत हैं और यहाँका दिल भी खूबसूरत है। यहाँकी हवा ठंडी है और यहाँका दिमाग भी ठंडा है। यहाँ भाईचारा भी है और आपस-आपस में प्यार भी है। यहाँके लोग फसाद करने में नाकामयाब होंगे और प्यार बढ़ाने में कामयाब होंगे। यह सिफत, यह कूवत, गुण यहाँके लोगों में है। ये गुण पुराने जमाने से चले आये हैं। यहाँ हजारों सालों से एक तमद्दुन चली आयी है। डोहलम (झेलम), चिनाव आदि नदियों के किनारे इन्सान दस हजार सालों से बसा है। इनके किनारे अच्छे-अच्छे खयाल सूझे हैं। इन्हीं नदियों के किनारे हजारों ऋषि-मुनियों ने तपस्या की है। उनकी औलाद यहाँ है। इसलिए यहाँ प्यार करने की सिफत है, झगड़े करने की नहीं। कुछ लोग झगड़े करनेवाले तो होते ही हैं, वैसे सारी दुनिया में हैं और यहाँ भी हैं। पर मूल में यहाँके लोगों का स्वभाव झगड़ा करने का नहीं है।

तहरीक की बुनियाद

अभी हमारे स्पीकर साहब ने कहा कि यहाँके लोग पहाड़ों में बसे हैं और यहाँ जमीन बहुत कम है, इसलिए यहाँ इस तहरीक की जरूरत नहीं है। लेकिन मेरा कहना यह है कि यहाँ जो भी जमीन है, आप उसकी मिलकियत छोड़ें। अगर यहाँकी जमीन की कीमत ज्यादा नहीं है तो आपको उसकी मिलकियत छोड़ना और भी आसान है। जमीन का मालिक अल्लाह है, हम नहीं। हम तो मुट्ठीभर मिट्टी भी पैदा नहीं कर सकते हैं। हवा और पानी का कोई मालिक नहीं हो सकता है, वैसे ही जमीन का भी कोई मालिक नहीं हो सकता है। इसलिए जमीन की मालकियत छोड़ें। सारा गाँव एक बनायें। गाँव की ताकत बनेगी तो दुनिया की जो मुश्किलें दीखती हैं, उनसे नजात मिलेगी। इधर दुनिया और उधर गाँव रहे। ज्यादा ताकत, ज्यादा सत्ता गाँव में रहे और दुनिया के मरकज में अखलाखी ताकत रहे।

आज छोटे-छोटे मरकजों में ज्यादा ताकत है, इसलिए कराची, श्रीनगर दिल्ली में ज्यादा ताकत है। वहाँ चंद लोगों के हाथ में सारी ताकत रहती है तो वे लोग कितने भी भले व नेक हों, लेकिन उनके लिए भी सबका भला करना नामुमकिन हो जाता है। अल्लाह ने सबको दिमाग दिया है, इसलिए हमारा कहना यह है कि देहात का मंसूबा दिल्ली न बनाये, देहात ही बनाये और दिल्ली सिर्फ उसे मदद करे। यही बात हमारी इस तहरीक की बुनियाद में है।

पुराने जमाने में एक व्यक्ति एक यूनिट था, आज एक ग्राम एक यूनिट रहेगा। पहले से बड़ा यूनिट रहेगा। इस समय सारे देश नजदीक आ गये हैं। ऐनक, फाउन्टेनपेन, लाउडस्पीकर आदि इस तरह की चीजें दुनियाभर से शहरों में आती हैं और दूसरी चीजें बाहर भेजी जाती हैं। यहाँ चीन और रूस नजदीक आया है, सात-आठ मिनट के फासले पर। आज हवाई जहाज से इधर-उधर जाने में कितना समय लगता है? इस तरह आज फासले टूट रहे हैं। जापान और अमेरिका को पहले पैसिफिक महासागर तोड़ता था, वही आज जोड़ता है। जहाँ समुन्दर जोड़ता है, वहाँ क्या हम दिलों को तोड़नेवाले बनेंगे? जहाँ कुदरत जोड़ रही है, वहाँ हम तोडनेवाले बनें तो क्या हम खुशहाल, सुखी रह सकेंगे? इसलिए रूहानियत और साइन्स दोनों का तकाजा है कि आप एक हो जायँ, इसीमें सबका भला है। ◆◆◆

संस्थाओं में सामुदायिक प्रार्थना का स्थान

प्रश्न: सामुदायिक जीवन में प्रार्थना के दो स्वरूप होते हैं, एक कर्ममय प्रार्थना, जहाँ जीवन का हरएक काम ईश्वर की आराधना के रूप में किया जाता है। ईसाई सन्त ब्रदर लोरेन्स के बारे में यह कहा जाता है कि वे समाज के लिए रसोई, सफाई आदि सब काम प्रार्थना के रूप में ही करते थे। प्रार्थना का दूसरा स्वरूप यह होता है कि समाज के सब सदस्य प्रतिदिन एक नियत समय पर ईश्वर की आराधना के लिए एकत्र होते हैं। किसी भी शिक्षण-संस्था में मेरे विचार में प्रार्थना का पहला स्वरूप सहायक होता है। हमारी शिक्षण-संस्था में समाज की रसोई, सफाई, शरीर-श्रम आदि सब प्रवृत्तियों में शिक्षक और विद्यार्थी सब नियमित रूप से भाग लें, यह अपेक्षा रहती है। इसी प्रकार संस्था की सामुदायिक प्रार्थना में भी शरीक होने की अपेक्षा रखना ठीक है कि नहीं?

उत्तर: संस्था में किसीकी भगवान पर श्रद्धा नहीं है तो भी भगवान के भक्तों पर तो श्रद्धा होती ही है। इसलिए भक्तों के साथ बैठने में उन्हें खुशी ही होनी चाहिए। मैं अगर नास्तिक हूँ और मुझे आपके साथ बैठने में ही उज्र हो तो मुझे वहाँ नहीं रहना चाहिए। समूह में हम अपेक्षा रख सकते हैं कि सब कोई प्रार्थना में आयें, लेकिन कोई नहीं आना चाहता है तो उसपर सोचना होगा। जिसमें कई सवाल आते हैं। एक मनुष्य को आप दूसरी सब तरह से मान्य करते हैं तो क्या केवल प्रर्थना के लिए जाने दिया जाय? लेकिन संस्था में विद्यार्थी और शिक्षक प्रार्थना में शरीक हों, यह अपेक्षा रखना ठीक है। ◆◆◆

अनुक्रम

१. रूहानियत मजहब के घेरे से बहुत दूर है
कुकरनाग २१ अगस्त '५९ पृष्ठ ६४७.
२. भूदान-तहरीक की जरूरत पूरी मानव जाति के लिए है
बनिहाल २४ अगस्त '५९ „ ६४९.

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी